اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत एतिकाफ़ की निय्यत की)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब कभी दाख़िले मस्जिद हों, याद कर के एतिकाफ़ की निय्यत कर लिया करें कि जब तक मस्जिद में रहेंगे, एतिकाफ़ का सवाब मिलता रहेगा । याद रखिए ! मस्जिद में खाने, पीने, सोने या सहरी, इफ़्तारी करने, यहां तक कि आबे ज़मज़म या दम किया हुवा पानी पीने की भी शरअ़न इजाज़त नहीं ! अलबत्ता अगर एतिकाफ़ की निय्यत होगी, तो येह सब चीज़ें ज़िम्मन जाइज़ हो जाएंगी । एतिकाफ़ की निय्यत भी सिर्फ़ खाने, पीने या सोने के लिए नहीं होनी चाहिए बल्कि इस का मक़्सद **अल्लाह** करीम की रिज़ा हो । **फ़तावा शामी** में है : अगर कोई मस्जिद में खाना, पीना, सोना चाहे, तो एतिकाफ़ की निय्यत कर ले, कुछ देर ज़िक्रुल्लाह करे फिर जो चाहे करे (यानी अब चाहे तो खा, पी या सो सकता है) ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ سَرَّهٗ اَنْ يَّلْقَى اللّٰهَ غَداً رَاضِياً، فَلْيُكْثِرِ الصَّلاةَ عَلَيَّ जिसे येह पसन्द हो कि **अल्लाह** पाक की बारगाह में पेश होते वक़्त **अल्लाह** पाक उस से राज़ी हो, तो उसे चाहिए कि मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़े ।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

1 ...فردوس الاخبار، ۲/۲۸۴، حدیث: ۶۰۸۳

बयान सुनने की निय्यतें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''اَفْضَلُ الْعَمَلِ اَلنِّيَّةُ الصَّادِقَةُ'' सच्ची निय्यत सब से अफ़्ज़ल अ़मल है।(1)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! हर काम से पेहले अच्छी अच्छी निय्यतें करने की आ़दत बनाइए कि अच्छी निय्यत बन्दे को जन्नत में दाख़िल कर देती है। बयान सुनने से पेहले भी अच्छी अच्छी निय्यतें कर लीजिए। मसलन निय्यत कीजिए : ❖ इ़ल्म सीखने के लिए पूरा बयान सुनूंगा। ❖ बा अदब बैठूंगा। ❖ दौराने बयान सुस्ती से बचूंगा। ❖ अपनी इस्लाह़ के लिए बयान सुनूंगा। ❖ जो सुनूंगा, दूसरों तक पहुंचाने की कोशिश करूंगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

वालिदैन की इताअ़त व फ़रमां बरदारी

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बिला शुबा मां बाप **अल्लाह** करीम की बड़ी नेमत हैं, वालिदैन इन्सान की ज़िन्दगी का बहुत बड़ा सहारा होते हैं। येही वोह हस्तियां हैं जो हर दुख, तक्लीफ़, मुसीबत, परेशानी और ग़म में इन्सान के साथ होते हैं, **अल्लाह** पाक ने वालिदैन को बड़ा मक़ामो मर्तबा अ़ता फ़रमाया है। वालिदैन के मक़ामो मर्तबे और इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत का अन्दाज़ा इस बात से कीजिए कि क़ुरआने पाक में **अल्लाह** पाक ने अपनी इ़बादत का हुक्म फ़रमाने के बाद वालिदैन के साथ एह़सान व भलाई करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया है। चुनान्चे, पारह 15, सूरए बनी इसराईल की आयत नम्बर 23 ता 25 में फ़रमाने बारी है :

1...جامع صغیر، صفحہ: ۸۱، حدیث: ۱۲۸۴

وَ قَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّاۤ اِیَّاهُ وَ بِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًاؕ اِمَّا یَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَاۤ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَاۤ اُفٍّ وَّ لَا تَنْهَرْهُمَا وَ قُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِیْمًا ﴿۲۳﴾ وَ اخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَ قُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّیٰنِیْ صَغِیْرًا ﴿۲۴﴾ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِیْ نُفُوْسِكُمْؕ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِیْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِیْنَ غَفُوْرًا ﴿۲۵﴾

(پ۱۵،بنی اسرائیل،۲۳تا۲۵)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम्हारे रब ने हुक्म फ़रमाया कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करो । अगर तेरे सामने उन में से कोई एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं, तो उन से उफ़ तक न केहना और उन्हें न झिड़कना और उन से ख़ूबसूरत, नर्म बात केहना और उन के लिए नर्म दिली से आ़जिज़ी का बाज़ू झुका कर रख और दुआ़ कर कि ऐ मेरे रब ! तू इन दोनों पर रहम फ़रमा जैसा इन दोनों ने मुझे बचपन में पाला, तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो तुम्हारे दिलों में है, अगर तुम लाइक़ हुवे, तो बेशक वोह तौबा करने वालों को बख़्शने वाला है ।

बयान कर्दा आयाते मुबारका के तह़्त ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुफ़्ती नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब वालिदैन पर ज़ो़फ़ (कमज़ोरी) का ग़लबा हो, आज़ा में क़ुव्वत न रहे और जैसा तू बचपन में उन के पास बे त़ाक़त था, ऐसे ही वोह आख़िरी उ़म्र में तेरे पास नातुवां (कमज़ोर) रेह जाएं, तो कोई ऐसी बात ज़बान से न निकालना जिस से येह समझा जाए कि उन की त़रफ़ से त़बीअ़त पर कुछ गिरानी (बोझ) है, न उन्हें झिड़कना, न तेज़ आवाज़ से बात करना बल्कि कमाले हुस्ने अदब (यानी निहायत अच्छे अदब) के साथ मां बाप से इस त़रह़ कलाम कर जैसे ग़ुलाम व ख़ादिम (अपने) आक़ा से करता है, उन से नर्मी व तवाज़ोअ़ से पेश आ और उन के साथ थके वक़्त में शफ़्क़त व मह़ब्बत का बरताव कर कि उन्हों ने तेरी मजबूरी

के वक़्त तुझे महब्बत से परवरिश किया था और जो चीज़ उन्हें दरकार हो, वोह उन पर ख़र्च करने में दरेग़ (बुख़्ल) न कर। मुद्दआ़ (मत़लब) येह है कि दुन्या में बेहतर सुलूक और ख़िदमत में कितना भी मुबालग़ा किया जाए लेकिन वालिदैन के एह़सान का ह़क़ अदा नहीं हो सकता, इस लिए बन्दे को चाहिए कि बारगाहे इलाही में उन पर फ़ज़्लो रह़मत फ़रमाने की दुआ़ करे और अ़र्ज़ करे कि या रब ! मेरी ख़िदमतें उन के एह़सान की जज़ा (बदला) नहीं हो सकतीं, तू उन पर करम कर कि उन के एह़सान का बदला हो। पारह 1, सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 83 में रब्बे करीम का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَاِذْ اَخَذْنَا مِیْثَاقَ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ ؕ وَ بِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًا (پ۱، البقرۃ:۸۳)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और याद करो ! जब हम ने बनी इसराईल से अ़ह्द लिया कि **अल्लाह** के सिवा किसी की इबादत न करो और मां बाप के साथ भलाई करो।

इस आयते करीमा के तह़्त ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक ने अपनी इबादत का हुक्म फ़रमाने के बाद वालिदैन के साथ भलाई करने का हुक्म दिया। इस से मालूम होता है कि वालिदैन की ख़िदमत बहुत ज़रूरी है, वालिदैन के साथ भलाई के येह माना हैं कि ऐसी कोई बात न कहे और ऐसा कोई काम न करे जिस से उन्हें तक्लीफ़ हो, अपने बदन व माल से उन की ख़िदमत में इन्कार न करे, जब उन्हें ज़रूरत हो, उन के पास ह़ाज़िर रहे, अगर वालिदैन अपनी ख़िदमत के लिए नवाफ़िल छोड़ने का हुक्म दें, तो छोड़ दे क्यूंकि उन की ख़िदमत नफ़्ल से अफ़्ज़ल है, अलबत्ता फ़राइज़ व वाजिबात वालिदैन के हुक्म से नहीं छोड़े जा सकते। वालिदैन के साथ एह़सान के त़रीक़े जो अह़ादीस से साबित हैं, वोह येह हैं कि दिल की गेहराई से उन के साथ

महब्बत रखे, उन की शान में ताज़ीम के लफ़्ज़ कहे, उन को राज़ी करने की कोशिश करता रहे, अपने बेहतरीन माल को उन से न बचाए, उन के मरने के बाद उन की वसिय्यतें पूरी करे, उन के लिए फ़ातिहा, सदक़ात, तिलावते कुरआन से ईसाले सवाब करे, **अल्लाह** पाक से उन की मग़फ़िरत की दुआ करे, हफ़्तावार उन की क़ब्र की ज़ियारत करे । वालिदैन के साथ भलाई करने में येह भी दाख़िल है कि अगर वोह गुनाहों की आदत में मुब्तला हों या किसी बद मज़हबी में गिरिफ़्तार हों, तो उन को नर्मी के साथ सहीह अक़ीदे की तरफ़ लाने की कोशिश करता रहे ।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इन आयाते मुबारका से वालिदैन की इज़्ज़त व अज़मत और उन के मक़ामो मर्तबे का अन्दाज़ा होता है । लिहाज़ा हमें चाहिए कि हम अपने वालिदैन की क़द्र करें, उन के एहसानात को याद रखें, उन की ख़िलाफ़े मिज़ाज बातों से दरगुज़र करें, उन का हर तरह से ख़याल रखें, उन से अच्छा सुलूक करें, उन की जाइज़ ज़रूरिय्यात पूरी करें, उन का हर जाइज़ हुक्म बजा लाएं, बिल ख़ुसूस जब वालिदैन बुढ़ापे की देहलीज़ पर क़दम रख चुके हों क्यूंकि ऐसे वक़्त में उन्हें औलाद की हमदर्दी की बहुत ज़ियादा ज़रूरत होती है कि बुढ़ापे में उन के आज़ा जवाब दे जाते हैं, बदन बीमारियों में जकड़ जाता है और अपने भी पराए हो जाते हैं । मां बाप का बुढ़ापा इन्सान को इम्तिहान में डाल देता है, बसा अवक़ात वालिदैन बुढ़ापे में मुख़्तलिफ़ अमराज़ में मुब्तला हो जाते हैं जिस की वज्ह से उ़मूमन औलाद बेज़ार हो जाती है मगर याद रखिए ! ऐसे हालात में भी मां बाप की ख़िदमत लाज़िमी है । लिहाज़ा बुढ़ापे और बीमारियों के बाइस मां बाप के अन्दर ख़्वाह कितना ही चिड़चिड़ापन आ जाए, बिला वज्ह लड़ें, चाहे कितना ही झगड़ें

1...ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 28

और परेशान करें, सब्र, सब्र और सब्र ही करना और उन की ताज़ीम बजा लाना ज़रूरी है । जी हां ! येही मक़ामे इम्तिहान है ! मां बाप से बद तमीज़ी करना और उन को झाड़ना वग़ैरा तो दूर की बात है, उन के आगे "**उफ़** !" तक नहीं करना चाहिए वरना बाज़ी हाथ से निकल सकती और दोनों जहां की तबाही मुक़द्दर बन सकती है कि वालिदैन का दिल दुखाने वाला इस दुन्या में भी ज़लीलो ख़्वार होता है और आख़िरत के अ़ज़ाब का भी ह़क़दार होता है ।

ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर में इताअ़त नहीं

हां ! अगर मां बाप किसी ख़िलाफ़े शरअ़ बात का हुक्म दें, मसलन दाढ़ी मुन्डवा दो वग़ैरा, तो इस सूरत में शरीअ़त ने उन का हुक्म मानने से मन्अ़ फ़रमाया है क्यूंकि रब्बे करीम की ना फ़रमानी में मख़्लूक़ की फ़रमां बरदारी करना जाइज़ नहीं । चुनान्चे, पारह 20, सूरतुल अ़न्कबूत की आयत नम्बर 8 में ख़ुदाए रह़मान का फ़रमाने हिदायत निशान है :

وَ وَصَّیۡنَا الۡاِنۡسَانَ بِوَالِدَیۡهِ حُسۡنًا ؕ وَ اِنۡ جَاهَدٰكَ لِتُشۡرِكَ بِیۡ مَا لَیۡسَ لَكَ بِهٖ عِلۡمٌ فَلَا تُطِعۡهُمَا ؕ اِلَیَّ مَرۡجِعُكُمۡ فَاُنَبِّئُكُمۡ بِمَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ۝۸

(پ:۲۰،العنکبوت:۸)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम ने (हर) इन्सान को अपने मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करने की ताकीद की और (ऐ बन्दे !) अगर वोह तुझ से कोशिश करें कि तू किसी को मेरा शरीक ठेहराए जिस का तुझे इ़ल्म नहीं, तो तू उन की बात न मान, मेरी ही त़रफ़ तुम्हारा फिरना है, तो मैं तुम्हें तुम्हारे आमाल बता दूंगा ।

इस आयते करीमा का शाने नुज़ूल बयान करते हुवे ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : येह आयत (ह़ज़रते) साद बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ के ह़क़ में नाज़िल हुई । उन की मां ह़मना बिन्ते अबी सुफ़्यान बिन उमय्या बिन अ़ब्दे शम्स थी ।

ह़ज़रते साद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ अपने वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करते थे, जब आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ इस्लाम लाए, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की वालिदा ने कहा : तू ने येह क्या नया काम किया ? ख़ुदा की क़सम ! अगर तू इस से बाज़ न आया, तो न मैं खाऊं, न पियूं, यहां तक कि मर जाऊं और तेरी हमेशा के लिए बदनामी हो और तुझे मां का क़ातिल कहा जाए । फिर उस बुढ़िया ने फ़ाक़ा किया, एक रोज़ न खाया, न पिया, न साए में बैठी, इस से कमज़ोर हो गई फिर एक रात और दिन इसी त़रह़ रही । तब ह़ज़रते साद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ उन के पास आए और कहा : ऐ मां ! अगर तेरी सौ जानें हों और एक एक कर के सब ही निकल जाएं, तो भी मैं अपना दीन छोड़ने वाला नहीं ! तू चाहे खा, चाहे मत खा ! जब वोह ह़ज़रते साद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की त़रफ़ से मायूस हो गई कि येह अपना दीन छोड़ने वाले नहीं, तो खाने पीने लगी, इस पर **अल्लाह** पाक ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और हुक्म दिया कि वालिदैन के साथ नेक सुलूक किया जाए और अगर वोह कुफ़्रो शिर्क का हुक्म दें, तो न माना जाए ।[1]

अगर मां बाप आपस में लड़ें, तो औलाद क्या करे ?

आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अगर मां बाप में बाहम तनाज़ोअ़ (यानी लड़ाई) हो, तो न मां का साथ दे, न बाप का, हरगिज़ ऐसा न हो कि मां की मह़ब्बत में बाप पर सख़्ती करे । बाप की दिल आज़ारी या उस को सामने जवाब देना या बे अदबाना आंख मिला कर बात करना, येह सब बातें ह़राम हैं और **अल्लाह** करीम की ना फ़रमानी है । औलाद को मां बाप में से किसी का ऐसा साथ देना हरगिज़ जाइज़ नहीं, वोह दोनों उस की जन्नत और दोज़ख़ हैं, जिसे ईज़ा (तक्लीफ़) देगा, जहन्नम का ह़क़दार ठेहरेगा । اَلْعِیَاذُ بِاللّٰہِ (**अल्लाह** पाक की

1...ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 735, मुलख़्ख़सन

पनाह) मासिय्यते ख़ालिक़ (यानी **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी) में किसी की इताअ़त (यानी फ़रमां बरदारी) जाइज़ नहीं, मसलन मां चाहती है कि बेटा अपने बाप को किसी त़रह़ आज़ार (यानी तक्लीफ़) पहुंचाए और अगर बेटा नहीं मानता यानी बाप पर सख़्ती करने के लिए तय्यार नहीं होता, तो वोह नाराज़ होती है, तो मां को नाराज़ होने दे और हरगिज़ इस मुआ़मले में मां की बात न माने, इसी त़रह़ मां के मुआ़मले में बाप की न माने। उ़लमाए किराम ने यूं तक़्सीम फ़रमाई है कि ख़िदमत में मां को तरजीह़ है और ताज़ीम बाप की ज़ाइद है कि वोह उस की मां का भी ह़ाकिम व आक़ा है।[1]

वालिदैन अल्लाह पाक की ना फ़रमानी का हुक्म दें तो ?

मालूम हुवा ! मां बाप अगर किसी नाजाइज़ बात का हुक्म दें, तो उन की बात न मानें, अगर नाजाइज़ बातों में उन की पैरवी करेंगे, तो गुनहगार होंगे, मसलन मां बाप झूट बोलने का हुक्म दें या नमाज़ क़ज़ा करने का कहें, तो उन की येह बातें हरगिज़ न मानें, चाहे वोह कितने ही नाराज़ हों, आप ना फ़रमान नहीं ठेहरेंगे, हां ! अगर मान लेंगे, तो ख़ुदाए ह़न्नानो मन्नान के ज़रूर ना फ़रमान क़रार पाएंगे। इसी त़रह़ मां बाप में बाहम त़लाक़ हो गई, तो अब मां लाख रो रो कर कहे कि दूध नहीं बख़्शूंगी और हुक्म दे कि अपने वालिद से मत मिलना, तो येह हुक्म न माने, वालिद से मिलना भी होगा और उस की ख़िदमत भी करनी होगी कि उन की आपस में अगर्चे जुदाई हो चुकी मगर औलाद का रिश्ता जूं का तूं (पेहले की त़रह़) बाक़ी है, औलाद पर दोनों के हुक़ूक़ बर क़रार हैं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...समुन्दरी गुम्बद, स. 21

वालिदैन के साथ एह़सान व भलाई करने पर अह़ादीसे मुबारका

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ कुरआनी आयात में वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करने की ताकीद की गई है, इसी त़रह़ अह़ादीसे मुबारका में भी वालिदैन के साथ एह़सान व भलाई करने और अदबो एह़तिराम के साथ पेश आने का हुक्म दिया गया है, लिहाज़ा वालिदैन को राज़ी करने की हर मुमकिन कोशिश करनी चाहिए कि उन की रिज़ा में **अल्लाह** पाक की रिज़ा और उन की नाराज़ी में **अल्लाह** पाक की नाराज़ी है। जैसा कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : वालिदैन की रिज़ा में **अल्लाह** पाक की रिज़ा और उन की नाराज़ी में **अल्लाह** पाक की नाराज़ी है।[1] ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वालिदैन का औलाद पर क्या ह़क़ है ? फ़रमाया : هُمَا جَنَّتُكَ وَنَارُكَ वोह दोनों तेरी जन्नत व दोज़ख़ हैं (यानी इन को राज़ी रखने से जन्नत मिलेगी और नाराज़ रखने से दोज़ख़ के मुस्तह़िक़ (ह़क़दार) होंगे)।[2]

जन्नत मां के क़दमों के नीचे

ह़ज़रते जाहिमा رَضِیَ اللهُ عَنْه ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं राहे ख़ुदा में लड़ना चाहता हूं और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में मश्वरा करने के लिए ह़ाज़िर हुवा हूं। इरशाद फ़रमाया : क्या तुम्हारी मां है ?

1...شعب الایمان، باب فی بر الوالدین، ۶/۱۷۷، حدیث: ۷۸۳۰

2... बहारे शरीअ़त, 3 / 553-ابنِ ماجه، کتاب الادب، باب بر الوالدین، ۴/۱۸۶، حدیث: ۳۶۶۲

अ़र्ज़ की : जी हां ! इरशाद फ़रमाया : فَالْزَمْهَا فَاِنَّ الْجَنَّةَ تَحْتَ رِجْلَيْهَا उस की ख़िदमत को अपने ऊपर लाज़िम कर लो क्यूंकि जन्नत उस के क़दमों के नीचे है ।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! वालिदैन की दुआ़एं औलाद के ह़क़ में मक़्बूल होती हैं, बस उन्हें ख़ुश रखिए, ख़ूब ख़िदमत कर के उन की दुआ़एं लीजिए, उन की ख़ुशी ईमान की सलामती और उन की नाराज़ी ईमान की बरबादी का बाइ़स हो सकती है । मां बाप का फ़रमां बरदार हमेशा शादो आबाद रेहता है, दुन्या में जहां कहीं रहे, अपने मां बाप की दुआ़ओं का फ़ैज़ उठाता है ।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले **"समुन्दरी गुम्बद"** सफ़ह़ा नम्बर 6 ता 7 पर फ़रमाते है : ख़ूब हमदर्दी और प्यार व मह़ब्बत से मां बाप का दीदार कीजिए, मां बाप की त़रफ़ ब नज़रे रह़मत देखने के भी क्या केहने ! सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : जब औलाद अपने मां बाप की त़रफ़ रह़मत की नज़र करे, तो **अल्लाह** पाक उस के लिए हर नज़र के बदले ह़ज्जे मबरूर (यानी मक़्बूल ह़ज) का सवाब लिखता है । सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : अगर्चे दिन में सौ मरतबा नज़र करे ! फ़रमाया : نَعَمْ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَاَطْيَبُ हां ! **अल्लाह** पाक सब से बड़ा है और सब से ज़ियादा पाक है ।[2] यक़ीनन **अल्लाह** पाक हर चीज़ पर क़ादिर है, वोह जिस क़दर चाहे दे सकता है, हरगिज़ आ़जिज़ व बेबस नहीं, लिहाज़ा अगर कोई अपने मां बाप की त़रफ़ रोज़ाना 100 तो क्या,

---

1...نسائی، کتاب الجهاد، الرخصة فی التخلف لمن له والدة، ص۵۰۴، حدیث: ۳۱۰۱

2...شُعَبُ الْاِیمان، ۱۸۶/۶، حدیث: ۷۸۵۶

एक हज़ार बार भी रह़मत की नज़र करे, तो वोह उसे एक हज़ार मक़्बूल ह़ज का सवाब इ़नायत फ़रमाएगा।

मां बाप का ह़क़ अदा नहीं हो सकता

यक़ीन मानिए ! वालिदैन के हुक़ूक़ बहुत ज़ियादा हैं और उन से बरिय्युज़्ज़िम्मा होना मुमकिन ही नहीं। चुनान्चे, एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने बारगाहे नबवी ने अ़र्ज़ की : एक राह में ऐसे गर्म पथ्थर थे कि अगर गोश्त का टुक्ड़ा उन पर डाला जाता, तो कबाब हो जाता, मैं अपनी मां को गरदन पर सुवार कर के छे मील तक ले गया हूं, क्या मैं मां के हुक़ूक़ से फ़ारिग़ हो गया हूं ? सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तेरे पैदा होने में दर्द के जिस क़दर झटके उस ने उठाए हैं, शायद येह उन में से एक झटके का बदला हो सके।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मां बाप हमेशा औलाद के ह़क़ में अच्छा ही सोचते हैं, अपनी लाडली औलाद के लिए बहुत कुछ करना चाहते हैं मगर बाज़ अवक़ात ह़ालात इजाज़त नहीं देते। किसी का बूढ़ा बाप आराम करने के बजाए अब भी मज़दूरी कर के अपने घर का गुज़र बसर चला रहा होता है, मां बेचारी कई बीमारियों में मुब्तला होने के बा वुजूद अपनी अदविय्यात भी पूरी नहीं कर सकती बल्कि आराम को क़ुरबान कर के रात गए तक कपड़े सिलाई कर के मेरे बाप का हाथ बटाती है कि किसी त़रह़ घर की दाल रोटी पूरी हो जाए।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें क्या हो गया है ? हम किस त़रफ़ चल पड़े हैं ? सोशल मीडिया के ग़लत़ इस्तिमाल (*Missuse*) ने हमें इस क़दर

1...مُعْجَم صغِیر، الجزءُ الاوّل، ص۹۲، حدیث:۲۵۷

मफ़्लूज कर के रख दिया है कि हमारी सोच ही बदल गई, हमारे दिल से मां बाप की क़द्रो मन्ज़िलत ही जाती रही। अरे ! ऐसी दोस्ती, ऐसी बैठक पर तुफ़ है जो हमें मां बाप के क़दमों से दूर कर के मुआ़शरे की गन्दगियों के ढेर में फेंक दे। आइए ! अब दिल थाम कर मां बाप की ना फ़रमानी करने वालों के अन्जाम पर मुश्तमिल चन्द सबक़ आमोज़ वाक़िआ़त सुनिए। चुनान्चे,

मां की ना फ़रमानी का वबाल

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबू औफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : एक आदमी बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : यहां एक नौजवान की मौत का वक़्त क़रीब है, उसे कलिमा पढ़ने का कहा गया लेकिन वोह नहीं पढ़ पा रहा। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा : क्या वोह अपनी ज़िन्दगी में कलिमा नहीं पढ़ता था ? लोगों ने अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं ! ज़रूर पढ़ता था। इरशाद फ़रमाया : तो फिर किस चीज़ ने उसे वक़्ते मर्ग कलिमा पढ़ने से रोक दिया ? फिर आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस नौजवान के पास तशरीफ़ ले गए और इरशाद फ़रमाया : नौजवान ! لَا اِلٰہَ اِلَّااللّٰہُ कहो। उस ने अ़र्ज़ की : मैं येह नहीं केह पा रहा। इरशाद फ़रमाया : क्यूं ? अ़र्ज़ की : मैं मां का ना फ़रमान रहा हूं। आप ने पूछा : मां ज़िन्दा है ? उस ने अ़र्ज़ की : जी हां ! (चुनान्चे, उस की वालिदा को बारगाहे नबवी में ह़ाज़िर किया गया) आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया : येह तुम्हारा बेटा है ? उस ने अ़र्ज़ की : जी हां ! इरशाद फ़रमाया : अगर एक ज़बरदस्त आग जलाई जाए और तुम से कहा जाए कि अगर तुम राज़ी न हुई, तो इस नौजवान को आग में डाल देंगे, तो तुम क्या करोगी ? वोह अ़र्ज़ गुज़ार हुई : फिर तो मैं इसे मुआ़फ़ कर दूंगी। इरशाद फ़रमाया : फिर तुम **अल्लाह** पाक और हमें गवाह बना कर कहो कि तुम इस से राज़ी हो। उस ने अ़र्ज़ की : मैं अपने बेटे से राज़ी हूं। फिर सरकारे नामदार

صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस नौजवान से फ़रमाया : لَا اِلٰہَ اِلَّااللّٰہُ कहो ! उस ने لَااِلٰہَ اِلَّااللّٰہُ कहा । तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** पाक की ह़म्द इन अल्फ़ाज़ के साथ बयान की : اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ اَنْقَذَہٗ بِیْ مِنَ النَّارِ तमाम तारीफ़ें उस ख़ुदा के लिए हैं जिस ने मेरे तुफ़ैल इसे जहन्नम से बचा लिया ।[1]

अल्लाह पाक हमें भी मरते वक़्त कलिमए त़य्यिबा पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

बीवी को ख़ुश करने के लिए मां को मारने वाले का अन्जाम

एक नौजवान के गुर्दे फेल हो गए, अस्पताल में दाख़िल कर दिया गया, ह़ालत निहायत ख़राब थी, रूह़ निकलने का अ़मल त़ारी हुवा, उस के मुंह और नाक से दर्दनाक आवाज़ें निकलती थीं, चेहरा नीला हो जाता और आंखें बाहर उबल पड़ती थीं, इस कैफ़िय्यत में दो दिन गुज़र गए । उन दर्दनाक आवाज़ों ने ख़ौफ़नाक चीख़ों का रूप धार लिया था, वॉर्ड के मरीज़ भागने शुरूअ़ हो गए, लिहाज़ा उसे वॉर्ड से दूर एक कमरे में मुन्तक़िल कर दिया गया । उस के बाप ने डॉक्टर से कहा : इसे ज़हर का टीका लगा दो ताकि येह मर जाए, हम से इस की ह़ालत देखी नहीं जाती । जब पूछा गया कि आख़िर इस की येह अ़जीबो ग़रीब ह़ालत क्यूं है ? बाप बेज़ारी के साथ बोल उठा : येह शख़्स अपनी बीवी को ख़ुश करने के लिए मां को मारता था और मैं इस को रोका करता था, ऐसा लगता है अब इस की सज़ा मिल रही है । आह ! 3 दिन के बाद उस ने इसी ह़ालत में दम तोड़ दिया ।

1...شعب الایمان، باب فی بر الوالدین، ۶/ ۱۹۷، حدیث: ۷۸۹۲

येह उसी का बदला है

ह़ज़रते साबित बुनानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : किसी मक़ाम पर एक आदमी अपने बाप को मार रहा था । लोगों ने उसे मलामत की, कि ऐ बदबख़्त ! येह क्या है ? इस पर बाप बोला : इसे छोड़ दो ! क्यूंकि मैं भी इसी जगह अपने बाप को मारा करता था, येही वज्ह है कि मेरा बेटा भी मुझे इसी जगह मार रहा है, येह उसी का बदला है, इसे मलामत मत करो ।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हम **अल्लाह** पाक की बारगाह में तौबा करते और उस से आ़फ़िय्यत का सुवाल करते हैं । आह ! मां बाप की दिल आज़ारी किस क़दर रुस्वाई और दर्दनाक अ़ज़ाब का बाइ़स है । मां बाप का बहुत ख़याल रखना चाहिए कि मां बाप जब आवाज़ दें, बिला उ़ज़्र जवाब में ताख़ीर न कीजिए, उ़मूमन बाज़ लोग इस में ला परवाई से काम लेते हैं और जवाब में ताख़ीर को مَعَاذَاللّٰه बुरा भी नहीं समझते ।

याद रहे ! मां बाप, दादा, दादी वग़ैरा के सिर्फ़ बुलाने से नमाज़ तोड़ना जाइज़ नहीं, अलबत्ता अगर उन का पुकारना किसी बड़ी मुसीबत के लिए हो, तो तोड़ दे । येह हुक्म फ़र्ज़ का है और अगर नफ़्ल नमाज़ है और उन को मालूम है कि नमाज़ पढ़ता है, तो उन के मामूली पुकारने से नमाज़ न तोड़े और उस का नमाज़ पढ़ना उन्हें मालूम न हो और पुकारा, तो तोड़ दे और जवाब दे, अगर्चे मामूली त़ौर से बुलाएं ।[2] (बाद में उस नमाज़े नफ़्ल को दोबारा अदा करना वाजिब है) जो लोग वालिदैन की पुकार पर ख़्वाह म ख़्वाह बे तवज्जोही का मुज़ाहरा कर के उन का दिल दुखाते हैं, वोह सख़्त गुनहगार और अ़ज़ाबे नार के ह़क़दार हैं । मां आख़िर मां होती है, बसा अवक़ात ग़लत़ फ़ह्मी में भी

1...تنبیہ الغافلین، باب حق الولد علی الوالد، ص۲۹

2... बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 638, मुलख़्ख़सन

उस के मुंह से बद दुआ़ निकल सकती है और अगर क़बूलिय्यत की घड़ी हो, तो औलाद आज़माइश में पड़ जाती है। चुनान्चे,

सुल्ताने दो जहान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : बनी इसराईल में जुरैज नामी एक शख़्स था, वोह नमाज़ पढ़ रहा था, उस की मां आई और उसे आवाज़ दी लेकिन उस ने जवाब न दिया। केहने लगा : नमाज़ पढ़ूं या इस का जवाब दूं। फिर उस की मां आई (और जवाब न पा कर उस ने बद दुआ़ दी :) ऐ **अल्लाह** पाक ! इसे उस वक़्त तक मौत न देना जब तक येह किसी फ़ाह़िशा (यानी बदकार) औ़रत का मुंह न देखे। जुरैज एक दिन इ़बादत ख़ाने में था, एक औ़रत ने कहा : मैं इसे बेहका दूंगी। लिहाज़ा वोह आ कर जुरैज से बातें करने लगी लेकिन उस (यानी जुरैज) ने इन्कार किया। आख़िर वोह एक चरवाहे के पास गई और अपने आप को उस के ह़वाले कर दिया। चुनान्चे, उस ने एक बच्चा जना और उसे जुरैज से मन्सूब कर डाला, लोग जुरैज के पास आए, उस का इ़बादत ख़ाना तोड़ कर उसे बाहर निकाल दिया और उसे बुरा भला कहा। जुरैज ने वुज़ू किया और नमाज़ पढ़ी फिर उस बच्चे के पास आया और कहा : बच्चे ! तेरा बाप कौन है ? उस ने जवाब दिया : फुलां चरवाहा। तो लोगों ने जुरैज से कहा : हम तुम्हारा इ़बादत ख़ाना सोने का बना देंगे। उस ने कहा : नहीं ! वैसा ही मिट्टी का बना दो।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　　صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! उ़मूमन हर बाप की येह दिली ख़्वाहिश होती है कि मेरी औलाद मेरी फ़रमां बरदार रहे, मेरे साथ अच्छा सुलूक करे, नेक, मुत्तक़ी व परहेज़गार बने, मुआ़शरे में इ़ज़्ज़तदार और पाकीज़ा किरदार वाली

1...بُخاری، ۲/۱۳۹، حدیث:۲۴۸۲

हो मगर अक्सर नतीजा इस के उलट ही आता है। क्यूं ? इस लिए कि जो बाप तरबियते औलाद के बुन्यादी इस्लामी उसूलों से ही ना वाक़िफ़, बे अ़मल और अच्छे माहोल की बरकतों से महरूम होगा, तो भला वोह क्यूं कर अपनी औलाद की अच्छी तरबियत कर पाएगा ? औलाद की अच्छी तरबियत न करने और उन्हें ह़द से ज़ियादा ढील देने के सबब बाप को कैसे कैसे दिन देखने पड़ते हैं। आइए ! इस बारे में 2 सबक़ आमोज़ ह़िकायात सुनिए और औलाद की इस्लामी त़रीक़े के मुत़ाबिक़ तरबियत करने की निय्यत कीजिए। चुनान्चे,

औलाद की इस्लामी तरबियत न करने का नुक़्सान

एक शख़्स ने अपने बाप से कहा : आप ने मेरे बचपन में (इस्लामी तालीमात के मुत़ाबिक़ तरबियत न कर के) मुझे ज़ाएअ़ किया, लिहाज़ा अब मैं आप के बुढ़ापे में आप को ज़ाएअ़ करूंगा।[1] अगर्चे उस शख़्स का अपने बाप को इस त़रह़ केहना हरगिज़ दुरुस्त नहीं था मगर इस में वालिद को ग़ौर करने की ज़रूरत है।

बे औलाद को जब औलाद मिली !

अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी किताब **"नेकी की दावत"** में तह़रीर फ़रमाते हैं : एक मालदार शख़्स के यहां औलाद न थी, उस ने इस के लिए बड़े जतन किए मगर काम्याबी न मिली। किसी ने मश्वरा दिया कि मक्कए मुकर्रमा ह़ाज़िर हो और मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ के अन्दर मक़ामे इब्राहीम के पास दुआ मांगिए, اِنْ شَآءَ الله आप का काम हो जाएगा। उस ने ऐसा ही किया और **अल्लाह** करीम ने उसे चांद सा बेटा दिया। उस ने बड़े नाज़ से उस की परवरिश की। इक्लौते बच्चे को ज़रूरत से ज़ियादा प्यार मिला और दुरुस्त

1...فیض القدیر، ۱/۲۹۲، تحت الحدیث: ۳۱۱

तरबियत न की गई जिस के सबब वोह आवारा और उड़ाव ख़र्च (फ़ुज़ूल ख़र्च) हो गया। बाप को बहुत देर में होश आया, उस ने अपने बिगड़े हुवे बेटे को पैसे देने बन्द कर दिए, इस से वोह अपने बाप का मुख़ालिफ़ हो गया और जहां उस के बाप ने औलाद के लिए दुआ मांगी थी जिस का येह समरा (यानी नतीजा) था, वहीं यानी मक्कए मुकर्रमा हाज़िर हो कर मक़ामे इब्राहीम के पास येह ना लाइक़ बेटा अपने बाप के मरने की दुआएं मांगने लगा ताकि बाप की मौत की सूरत में इसे तर्के (यानी विरसे) में उस की दौलत हाथ आ जाए।[1]

शोबा मदनी क़ाफ़िला

प्यारे इस्लामी भाइयो ! औलाद की दुरुस्त इस्लामी तरबियत से ग़फ़्लत बरतना बाप को अफ़्सोस और शर्मिन्दगी की दलदल में धकेल सकता है, लिहाज़ा ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो जाना चाहिए, तरबियते औलाद के उसूल सीखने चाहिएं, औलाद के मुआमले में शरई अहकाम को नज़र अन्दाज़ मत कीजिए, अपनी औलाद को **अल्लाह** पाक का फ़रमां बरदार बन्दा और रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सच्चा पक्का ग़ुलाम बनाइए, अपने किरदार को सुन्नतों के सांचे में ढालने की कोशिश जारी रेहनी चाहिए, येह मदनी सोच पाने के लिए आशिक़ाने रसूल की दीनी तहरीक दावते इस्लामी के दीनी माहोल से वाबस्ता हो कर सुन्नतों की ख़िदमत में मसरूफ़ हो जाइए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه आशिक़ाने रसूल की दीनी तहरीक दावते इस्लामी कई शोबाजात में नेकी की दावत की धूमें मचाने में मसरूफ़े अमल है, इन्हीं में से एक शोबा **"मदनी क़ाफ़िला"** भी है। इस शोबे का काम आशिक़ाने रसूल की मस्जिद भरो दीनी तहरीक दावते इस्लामी के पैग़ाम को सारी दुन्या में आम करने के लिए हर इस्लामी भाई को ज़िन्दगी में एक साथ 12 माह, हर 12 माह में एक माह और हर माह शिडयूल के मुताबिक़ 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले में

1... नेकी की दावत, स. 577

सफ़र के लिए तय्यार करना, सफ़र करवाना और नेकी की दावत देने वाला बनाना है। इस शोबे के तह़्त सुन्नतों की तरबियत के लिए आ़शिक़ाने रसूल के बे शुमार मदनी क़ाफ़िले मुख़्तलिफ़ शहरों (Cites) और गांव देहात (Villages) वग़ैरा की त़रफ़ सफ़र करते रेहते हैं, इल्मे दीन और सुन्नतों की बहारें लुटाते और नेकी की दावत की धूमें मचाते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه शोबा मदनी क़ाफ़िला के तह़्त कई मक़ामात पर "**दारुस्सुन्नह**" क़ाइम हैं जिन में दूरो नज़्दीक से आने वाले इस्लामी भाई तरबियत पाते और आ़शिक़ाने रस्सूल की सोह़बत में सुन्नतों की तरबियत पा कर नेकी की दावत आ़म करते हैं। **अल्लाह** करीम शोबा "**मदनी क़ाफ़िला**" को मज़ीद तरक़्क़ियां नसीब फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

12 दीनी कामों में से एक दीनी काम "यौमे तात़ील एतिकाफ़"

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मां बाप के हुक़ूक़ जानने, उन का अदबो एह़तिराम करने का जज़्बा पाने, अपनी औलाद की अच्छी तरबियत करने, फ़िक्रे आख़िरत का ज़ेहन पाने, नेक बनने और सुन्नतों पर अ़मल का जज़्बा बढ़ाने के लिए आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दावते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता रेहते हुवे कुछ न कुछ वक़्त ज़ैली ह़ल्क़े के 12 दीनी कामों में देने की कोशिश करें। ज़ैली ह़ल्क़े के 12 दीनी कामों में से एक दीनी काम "**यौमे तात़ील एतिकाफ़**" भी है। छुट्टी वाले दिन शह़र के कमज़ोर अ़लाक़ों और अत़राफ़ के गांव, गोठों में जा कर वहां की मसाजिद को आबाद करने के साथ साथ मक़ामी आ़शिक़ाने रसूल को नेकी की दावत दे कर इल्मे दीन सीखने, सिखाने की तरकीब की जाती है। ❖ اَلْحَمْدُ لِلّٰه यौमे तात़ील एतिकाफ़ इस्लामी भाइयों को सुन्नतें व आदाब और दर्स वग़ैरा का त़रीक़ा सिखाने का

बेहतरीन ज़रीआ़ है । ❖ यौमे ताती़ल एतिकाफ़ की बरकत से मसाजिद आबाद होती हैं । ❖ यौमे ताती़ल एतिकाफ़ की बरकत से मस्जिद में गुज़रने वाला हर हर लम्हा इबादत में शुमार होगा । ❖ यौमे ताती़ल एतिकाफ़ की बरकत से मस्जिद से महब्बत करने और उस में अपना ज़ियादा से ज़ियादा वक़्त गुज़ारने की फ़ज़ीलत हासिल होगी ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه अपना ज़ियादा वक़्त मस्जिद में गुज़ारने की भी क्या ख़ूब फ़ज़ीलत है कि ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तुम किसी शख़्स को देखो कि वोह मस्जिद में कसरत से आमदो रफ़्त रखने वाला है, तो उस के ईमान की गवाही दो क्यूंकि **अल्लाह** पाक पारह 10, सूरए तौबा, आयत नम्बर 18 में इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّمَا یَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ وَ اَقَامَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَى الزَّكٰوةَ (پ۱۰، التوبہ:۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह की मस्जिदों को वोही आबाद करते हैं जो **अल्लाह** और क़ियामत के दिन पर ईमान लाते हैं और नमाज़ क़ाइम करते हैं और ज़कात देते हैं ।[1]

ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से (तो उस के ईमान की गवाही दो) के तह़्त मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : क्यूंकि येह चीज़ें ईमान की अ़लामतें हैं । ख़याल रहे कि येह गवाही ऐसी ही है जैसे किसी का लिबास और शक्ल देख कर हम उसे मोमिन समझते और केहते हैं, गवाही से मुराद क़त़ई फ़ैसला नहीं । (मुफ़्ती साह़िब मज़ीद फ़रमाते हैं) : यहां मस्जिद की आबादी में मस्जिदों में चराग़ां करना, उस को सजाना सब दाख़िल है ।[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

1...ترمذی، کتاب الایمان، باب ماجاء فی حرمۃ الصلوۃ، ۴/۲۸۰، حدیث:۲۶۲۶

2...मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 444-445, मुल्तक़त़न, ब तग़य्युर

सुल्ह़ करने के मदनी फूल

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आइए ! सुल्ह़ करने के मदनी फूल सुनने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं । ❖ मुसलमानों के दरमियान सुल्ह़ करवाना सुन्नते इलाहिय्या है ।[1] ❖ ह़दीसे पाक में है : मख़्लूक में सुल्ह़ करवाओ क्यूंकि **अल्लाह** करीम भी बरोज़े क़ियामत मुसलमानों में सुल्ह़ करवाएगा ।[2] ❖ मुसलमानों के दरमियान प्यार व मह़ब्बत पैदा करना और सुल्ह़ करवाना प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की (भी) सुन्नत है ।[3] चुनान्चे, हमारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने औस व ख़ज़रज दो क़बीलों के दरमियान सुल्ह़ करवाई ।[4] ❖ झूट बोल कर दो मर्दों या मर्द और औ़रत के दरमियान सुल्ह़ करवाना जाइज़ है ।[5] चुनान्चे, ह़दीसे पाक में है : झूट कहीं ठीक नहीं मगर तीन जगहों में : (1) मर्द का अपनी औ़रत को राज़ी करने के लिए (झूटी) बात करना । (2) लड़ाई में झूट बोलना और (3) लोगों के दरमियान सुल्ह़ कराने के लिए झूट बोलना ।[6]

एलान

सुल्ह़ करने के बक़िय्या मदनी फूल तरबियती ह़लक़ो में बयान किए जाएंगे लिहाज़ा इन को जानने के लिए तरबियती ह़लक़ों में ज़रूर शिर्कत कीजिए ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...फ़ैसला करने के मदनी फूल, स. 31, मुलख़्ख़सन

2...مستدرک، ۵/۷۹۵، حدیث:۸۷۵۸

3...सिरातुल जिनान, 2 / 19

4...تفسیر درمنثور، آل عمران، تحت الآیۃ: ۱۰۰، ۲/۲۷۹ماخوذاً

5...जहन्नम में ले जाने वाले आमाल, 2 / 713

6...ترمذی، ۳/۳۷۷، حدیث: ۱۹۴۵

दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक और 2 दुआएं

﴾1﴿ **शबे जुम्आ़ का दुरूद :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِى الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुम्आ़ (जुम्आ़ और जुमेरात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा, मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे **क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं ।**[1]

﴾2﴿ **तमाम गुनाह मुआ़फ़ :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّم

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पेहले और बैठा था, तो खड़े होने से पेहले उस के **गुनाह मुआ़फ़ कर दिए जाएंगे ।**[2]

﴾3﴿ **रह़मत के सत्तर दरवाज़े :**

صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

1...افضل الصلوات علی سید السادات، الصلاۃ السادسۃ والخمسون، ص۱۵۱ ملخصًا

2...افضل الصلوات علی سید السادات، الصلاۃ الحادیۃ عشرۃ، ص۶۵

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है, तो उस पर **रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिए जाते हैं।**[1]

﴾4﴿ **दुरूदे शफ़ाअ़त :**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

रसूले पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े, उस के लिए **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है।**[2]

﴾5﴿ **छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِيْ عِلْمِ اللهِ صَلَاةً دَآئِمَةً بِدَوَامِ مُلْكِ اللهِ

ह़ज़रते अह़मद सावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बाज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से **छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब** ह़ासिल होता है।[3]

﴾6﴿ **कुर्बे मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى لَهٗ

एक दिन एक शख़्स आया, तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ عَنْه के दरमियान बिठा लिया। इस से सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم को ह़ैरत हुई कि **येह कौन बड़े मर्तबे वाला है!** जब वोह चला गया, तो सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है, तो यूं पढ़ता है।[4]

1...القول البدیع، الباب الثانی، ص۲۷۷

2...الترغیب والترہیب ج۲ص۳۲۹، حدیث ۳۱

3...افضل الصلوات علی سید السادات، الصلاۃ الثانیۃ والخمسون، ص۱۴۹

4...اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص۱۲۵

एक हज़ार दिन की नेकियां

جَزَى اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ اَهْلُهٗ

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस को पढ़ने वाले के लिए **सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं ।**[1]

गोया शबे क़द्र हासिल कर ली

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने इस दुआ को 3 मरतबा पढ़ा, तो गोया उस ने शबे क़द्र हासिल कर ली ।[2] दुआ येह है :

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ ، سُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ

(यानी हिल्म और करम फ़रमाने वाले **अल्लाह** पाक के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं । **अल्लाह** पाक है, सात आसमानों और अ़ज़मत वाले अ़र्श का रब ।)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...مجمع الزوائد، کتاب الادعیۃ، باب فی کیفیۃ الصلاۃ...الخ، ۱۰/۲۵۴، حدیث: ۱۷۳۰۵

2...تاریخ ابن عساکر، ۱۹/۱۵۵، حدیث: ۴۴۱۵